CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS MoE Grant-2

7.3 परमपूज्य [illegible] महाराज

卐 कृण्वन्तो विश्वमार्यम्—ऋग्वेद 卐

अखिल भारतीय भूमिहार ब्राह्मण महासभा

के जन्म के ११२ वें वर्ष में

अखिल भारतीय भूमिहार ब्राह्मण महासभा

का ३५वाँ अधिवेशन

ज्येष्ठ शुक्ल २ व ३ सं० २०५१ वि०

दिनांक ११ व १२ जून सं० १९९४ ई०

स्वामी सहजानन्द सरस्वती नगर

ग्राम व पोस्ट – सिमरी

जिला – बक्सर (बिहार)

प्रकाशक

अधिवेशन समिति, सिमरी (बक्सर) बिहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

卐 कृण्वन्तो विश्वमार्यम्—ऋग्वेद 卐

अखिल भारतीय भूमिहार ब्राह्मण महासभा

के जन्म के ११२ वें वर्ष में

अखिल भारतीय भूमिहार ब्राह्मण महासभा

का ३४वाँ अधिवेशन

ज्येष्ठ शुक्ल २ व ३ सं० २०५१ वि०

दिनांक ११ व १२ जून सं० १९९४ ई०

स्वामी सहजानन्द सरस्वती नगर

ग्राम व पोस्ट – सिमरी

जिला – बक्सर (बिहार)

प्रकाशक

अधिवेशन समिति, सिमरी (बक्सर) बिहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पत्र व्यवहार का पता —

१. पं० चौधरी राजनारायण शर्मा "विशारद"
महामंत्री, अखिल भारतीय भूमिहार ब्राह्मण महासभा
ग्राम– श्रीरामपुर अयोध्या
पोस्ट – वैनी – ८४८१३१
जिला – समस्तीपुर (बिहार)

२. पं० चन्द्रभाल राय, एडवोकेट
सी ४/३३० सराय गोवर्धन, चेतगंज, वाराणसी–२२१००१
फोन नं० – ३५४५१०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय सूची

१. स्वागत–भाषण — पृष्ट संख्या – १
(पं० चन्द्रभाल राय, एडवोकेट, सुप्रीमकोर्ट)
अध्यक्ष, पूर्वाञ्चल ब्राह्मण समाज

२. महामंत्री का भाषण — ,, १४
(पं० चौधरी राजनारायण शर्मा "विशारद")
महामंत्री, अखिल भारतीय भूमिहार ब्राह्मण महासभा
महामंत्री, पूर्वाञ्चल ब्राह्मण समाज

३. अधिवेशन में पारित प्रस्ताव — ,, २३
(मंच संचालक, पं० चन्द्रभाल राय, एडवोकेट)

४. ३४ वाँ अधिवेशन की कार्यवाही — ,, ३०
(महामंत्री पं० चौधरी राजनारायण शर्मा "विशारद"
महामंत्री, अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा

५. अध्यक्षीय भाषण — ,, ३३
(व्याकरण–साहित्यादि आचार्य पं० रामख्याली शर्मा)

—: ०० :—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मद्रवा पुण्यसलिला माता भगवती भागीरथी के पूर्व अंचल में और पूर्ववाहिनी माता जान्हवी के दक्षिण अंचल में अवस्थित प्रातः- स्मरणीय पूज्य स्वामी सहजानंद सरस्वतीजी का आजीवन कृपाभाजन, कर्मभूमि, अनेकों समाज सेवियों, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की जन्मभूमि और कर्मभूमि अपने गाँव सिमरी (जिला-बक्सर) में अपने गाँव के निवसियों की ओर से, अपनी ओर से आप सभी समवेत बन्धुओं का स्वागत करता हूं, अभिनंदन करता करता हूं ।

आपमें देश के समस्त अंचलों- पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण-से पधारे बन्धु हैं, महानगरियों से पधारे बन्धु हैं, तो सुदूर गाँवों से आये बन्धु भी हैं। आपमें प्राचीन और आर्वाचीन शास्त्रों, विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के मर्मज्ञ और अध्येता हैं तो सामान्य नागरिक जन भी हैं विभिन्न व्यवसायों धंधों, पेशाओं, नौकरियों में संलग्न बन्धु हैं, तो सब को जीवनाधार देनेवाले सदा सर्व श्रेष्ठ मानेजाने वाले सदगृहस्थ कृषक भी प्रर्याप्त संख्या में उपस्थित हैं । सबका पुनः स्वागत करता हूं । मनोनीत अध्यक्ष डा० पं० रामकरण शर्मा की अस्वस्थता के कारण अनुपस्थिति की दशा में आपने अस्सी वर्षीय विद्वान आचार्य राम ख्याली शास्त्री को अध्यक्ष सर्वसम्मति से निर्वाचित किया है वे उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के उत्तरी अंचल के निवासी हैं, व्याकरण-साहित्याचार्य, कर्मकाण्ड पौरोहित्याचार्य हैं। जीवन पर्यन्त इन शास्त्रों के अध्ययन, अध्यापन, अनुशीलन में संलग्न रहे हैं और आज भी संलग्न बाद हैं संस्कृताध्योपन के कार्य से अवधि के कारण अवकाश प्राप्त कर लेने के बहुत वर्षो तक भारत सरकार से चूडामणि अध्यापक नियुक्त रहे है। आज भी इस चौथे पन की ऊँची उम में पूर्णतया अवैतनिक और निःशुल्क संस्कृत अध्यापन का कार्य स्थानीय स्वामो सहजानंद सरस्वती महाविद्यालय में कर रहे हैं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये आचार्य पं० रामखयाली शास्त्री पूज्य स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी के बिहटा के श्री सीतारामाश्रम के विद्यार्थी रहे हैं। ऊपर उक्त विषयों में किसी भी विद्वान या सामान्य कोटि का छात्र इनसे ज्ञान प्राप्त कर संतुष्ट होता है। इस प्रकार ये छात्र, अध्यापक, और अभिभावक वर्ग सब के श्रद्धाभाजन है।

महामंत्री श्रद्धेय पं० चौधरी राजनारायण शर्मा जी उत्तर बिहार के समस्तीपुर जिले के निवासी हैं। इन्होंने ब्राह्मणत्व और ब्राह्मण समाज के लिए जितना अधिक लिखा है और किया है उतना अधिक आजकल शायद ही किसी ने किया हो। आप लगभग सभी उत्तर और पश्चिम भारतीय विभिन्न ब्राह्मण संगठनों से सम्बन्धित हैं और उनसे आमंत्रित होते रहते हैं। आप यशस्वी साहित्यकार और समाजसेवी के अतिरिक्त स्व० पूज्य पं० सूर्यनारायण शर्मा के मीत्र और उनकी दूसरी जयन्ती के मुख्य अतिथि भी रहे।

उत्तर बिहार से सहायक के साथ पधारे अस्सी वर्षीय संस्कृत विद्वान पं० रामकेदार शर्माजी पूज्य स्वामी सहजानंद सरस्वतीजी के सीतारामाश्रम बिहटा के अध्यापक रह चुके हैं। हमारे संरक्षक मण्डलके प्रमुख लगभग नब्बे वर्षीय संस्कृत विद्वान आचार्य पं० विश्वनाथ शर्माजी भी स्वामीजी के आश्रम के प्रमुख अध्यापक और शासक रह चुके हैं। इन्हीं की उम् के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हमारे गाँव के पं० सिद्धनाथ राय जी भी उल्लेखनीय संरक्षक हैं। उत्तर भारत से पधारे स्वतंतत्रा संग्राम सेनानी पं० गिरिधर शर्माजी भी हमारे विशिष्ठ अतिथि हैं। स्थानाभाव और समयाभाव के कारण सभी विशिष्ठ व्यक्तियों का उल्लेख संभव नहीं है जिसके लिए क्षमाप्रार्थी हूं। हाँ, राजशास्त्र को अन्यतम ग्रंथ " को टिलीय अर्थशास्त्र " के महान प्रणेता महर्षि कौटिल्य या चाणक्य के बंशज चनकिया भूमिहार ब्राह्मणों एवं महान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्राट पुष्यमित्र शुंग के वंशज शुंगनिया भूमिहार ब्राह्मणों का उल्लेख करना रोक नहीं सकता। हजारीबाग जिले के सैकड़ों वर्षों से खान्दानी पेशा के रूप में पुरोहिती करानेवाले भूमिहार ब्राह्मण भी हैं। आप सब अखिल भारतीय भूमिहार ब्राह्मण महासभा के जन्म के दूसरी शताब्दी के प्रथम चरण में होनेवाले इस महाधिवेशन में महत्वपूर्ण विषयों पर विचार विनिमय करके निर्णय लेगे और व्यवस्था देंगे। आज हिन्दू समाज संकटापन्न हो रहा हैं। विघटन कारी प्रवृत्तियाँ कुत्सित क्षुद्र स्वार्थवश जातीय-विद्वेष, अराजकता और अव्यवस्था उत्पन्न करने में लगी हैं। धर्म संरक्षण, वेदरक्षण सामाजिक सुव्यवस्था आपका दायित्व है, आपकी विरासत है। ब्राह्मण समाज के भ्रमित और आत्म-विस्मृत होने के कारण धर्म का समुचित नियमन नहीं हो पा रहा है जिससे समाज को धारण करने वाला धर्म क्षरण हो रहा है। मानव धर्मशास्त्र के अनुसार आप धर्म के साक्षात स्वरूप हैं और विश्व भरके लोगों को आदेश है कि आप से ही अपने-अपने चरित्र की शिक्षा ग्रहण करें" एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥ ब्राह्मणत्व का मूल सदाचरण ही हैं यह बात अन्यत्रभी स्पष्ट की गई है मनु २/२० उसी ग्रंथ के प्रथम अध्याय के श्लोक ९६-९७ हैं। भूतानां प्राणिनःश्रेष्ठाः प्राणिनां द्विजीविनः बुद्धिमत्सु नराःश्रेष्ठा नरेषु ब्राह्मणाः स्मृताः ब्राह्मणेषुच विद्वांसः विद्वत्सु कृतबुद्धयः। कृतबुद्धिषु कर्त्तारः कर्तृषु ब्रह्मवेदिनः। मनु १/९६-९७ इस प्रकार ब्राह्मण को पांच कोटियाँ हैं। साधारण ब्राह्मण विद्वान भी नहीं है, दूसरा विद्वान ब्राह्मण है, तीसरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0: In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृतबुद्धि ब्राह्मण है चौथा कर्त्तार ब्राह्मण है और पाँचवा सर्वश्रेठ ब्राह्मण ब्रह्मवेत्ता होता है। गोस्वामीतुलसी दासजी ने ब्राह्मणकी छः कोटियाँ गिनाई हैं।

सब मम प्रिय सब मम उपजाये। सबते अधिक मनुज मोहिभाये ॥
तिन्ह महें द्विज-द्विज महें श्रुतिधारी। तिन्ह महें निगम धरम अनुसारी ॥
तिन्ह महें प्रिय विरक्त पुनि ज्ञानी। ज्ञानि हुँते अति प्रिय विज्ञानी ॥

गोस्वामी जीकी छः— रामचरितमानस/ उत्तर काण्ड में ८५–८६

कोटियों में पहला जो वेदपाठी न हो, दूसरा जो वेद को धारण करनेवाला हो तीसरा जो वेद के धर्म का अनुसरण करे, चौथा विरक्त ब्राह्मण, पाँचवा ज्ञानी ब्राह्मण और छठवाँ सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण विज्ञानी ब्राह्मण माना गया है। यजुर्वेद में भी परमेश्वर से प्रार्थना की गई है—

"ओं आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसीजायतामः
यजुर्वेद २२/२२ हे प्रभो। ब्राह्मण ब्रह्मस्वंस्वयुक्त हो"

अर्थात सभी ब्राह्मण ब्रह्मवेत्ता या ब्रह्मवचंस्व युक्त नहीं होते थे। इस प्रकार स्पष्ठ है कि सामान्य ब्राह्मण का गुण कर्म ऊपरकी कोटियों से भिन्न है। इसका समाधान है।

आचारहीनाः न पुनन्ति वेदाः यद्यप्यधीता सहषडभिरङ्गैः।
शिल्पं हि वेदाध्ययनं द्विजानां वृत्तं स्मृतं ब्राह्मण लक्षणं तु ॥

मनु अर्थात षडंग वेदों के ज्ञाता को भी वेद पवित्र नहीं करते, बल्कि सदाचरण ही ब्राह्मणका लक्षण है। प्रमाण भी है। रावण षडंग वेदों का ज्ञाता होने पर भी सदाचरणके अभाव में अनार्थ, दस्यु, राक्षस माना गया।

ब्रह्माने ब्राह्मणों की सर्जना वेदकी रक्षा, देवता-पितरों की तृप्ती और धर्म के संरक्षण के लिये की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तपस्तप्त्वाऽ सृजद् ब्रह्मा ब्राह्मणानवेदगोप्तये ।
तृप्तयर्थं पितृ–देवनां धर्मसंरक्षणाय च ।।

इस प्रकार ब्राह्मण का दायित्व, जिम्मेदारी वेदोंकी रक्षा, देवता-पितरों की तृप्ति और धर्म कासंरक्षण, सुरक्षा निश्चित किया गया । वेद की रक्षा के लिये वेदों के आदेशका पालनअनिवार्य कर्तव्य है । इससे धर्म का संरक्षण भी हो जाता हैं । वेद के आदेशानुसार न तो कोई बड़ा है न छोटा है ।

"अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते ,, सं
भ्रातरों वावृधुः सौभगाय । ऋग्वेद ५/६०/५

वेद में बहुत स्थलों पर आदेश है कि हम श्रेष्ठ बनें और दूसरों को भी श्रेष्ठ, आर्य, बनायें एकमंत्र है—

" इन्द्रं वर्द्धन्तु अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वं आर्यं अपघ्नन्तो आराव्णः"

ऋग्वेद ९/६३/५ हमारे पूज्य पूर्वज वेद के आदेशों का बड़ी उदारता और तत्परता से पालन करते थे । इसी से हममें हूण, शक, सीथियन, सूची, आन्ध्र पुलिन्द, पुल्कस खस, यवन आदि जातियां पूर्णतया मिल गई और सनातन गंगा में एक रूप हो गई जिसका प्रमाण इतिहास ग्रंथों और श्रीमदभागवत (२/४/१८) आदि पुराणों में प्राप्त

किरात हूणान्ध्र पुलिन्दपुल्कसा आभीरकंका यवनाखसादयः ।
ये ऽन्येच पापा यदुपा श्रयाः श्रयाः शुधयन्ति तस्मै प्रभ विष्ण वे नमः ।

होते हैं । इससे ठीक उल्टा आज हम कर रहे हैं । कुछ ही समय पहले दोल्ली के अंग्रेजी दैनिक टाइम्स आफ इंडिया के १२ फरवरी ९४ के अंक में एक समाचार प्रकाशित हुआ था कि मनिपुर के मिटी आदिवासी जो नव लाख हैं, तीन सौ वर्षो तक शुद्ध सनातनी वैष्णव रहने के बाद अब अपने पुराने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदिवासी धर्म में सिर्फ इसलिये वापिस जा रहे हैं क्यों कि ब्राह्मण पुरोहित आज भी उन्हें प्रभु-प्रतिमा के चरणस्पर्शकी अनुमति नहीं देते। यजुर्वेद के ३१/११ के अदेशानुसार विराट् पुरूष का ब्राह्मण मुख हैं, क्षत्रिय बाहु है, वैश्य जंघा है और शूद्र पादस्थानीय है। विराट् पुरूष के बाहर विश्व ब्रह्माण्ड में कुछ भी नहीं हो सकता। विराट् पुरुष का प्रत्पेक अंग पूज्य और वंदनीय है और प्रणाम तो पैर छूकर ही किया जाता, हैं। माता, पिता गुरु और स्वयं प्रभु का चरणस्पर्श करके प्रणाम ही किया जाता है, इस दशा में विराट् पुरुष का पादस्थानीय शूद्र अछूत कैसे हो सकता है। स्वार्थपरता से धर्म का गलत अर्थ मनमाना तौर पर करके अधर्म किया जा रहा है। पाप किया जा रहा है इसे रोकना हमारा धर्म है संस्कार के अभाव में संकुचित स्वार्थवृत्ति अनिष्ट कर रही है' जिससे संसकार युक्त ब्राह्मण के बजाय संस्कार हीन शूद्र बनना पतन है जैसे प्रधानमंत्री का चपरासी बनना हमारी संस्कृति कलंकित हो रही है। संस्कार के अभावमें मनुष्य अपने कर्म और आचरण का फलाफल नहीं समझ पाता है और दूषित कार्यो से शिष्टता और आचरण में दाग लगाता है अपना और समाज का अनिष्ठ ही करता है। अब यदि मनिपुर के नव लाख आदिवासी हिन्दू सनातन धर्म से बाहर हो गये तो ब्राह्मण पुरोहित को पूछेगा कोन और उसकी जीविका तो अपने आप ही समाप्त हो जयगा। यह कुसंस्कार का ही दुपरिणाम है। इसे शुद्ध होना आवश्यक है। संस्कारहीन व्यक्ति अपना तथा समाज, देश, धर्म और सभ्यता का अनिष्ठ ही करेगा। सिर्फ संस्कारयुक्त व्यक्ति ही अपना तथा समाज, देश, धर्म और सभ्यता सबका कल्याण कर सकता है। संस्कारयुक्त लोगों से ही संस्कृति पुष्पित पल्लवित होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुसंस्कार ही संस्कृतिकी अमूल्यनिधि है, धरोहर हैं ब्राह्मणकी अन्य जिम्मेवारी देवताओं-पितरों की तृप्ति है। यज्ञ या गादि देव पूजा, पितृ पुजा के विभिन्न कार्यो में पुरोहितों की सहायता अनिवार्य है । यज्ञ या गादि देवता-पितर सम्बन्धी धार्मिक कृत्य ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी के लिए थोड़ा बहुत परिवंतन के साथ करना आवश्यक है पर पुरोहित बनने का अधिकारी एक मात्र ब्राह्मण ही है जिसे अपना और दूसरो का धार्मिक कृत्य करना कराना चाहिये । क्षत्रिय, वंश्य और शूद्र पुरोहितो नहीं कर सकते। वेद का प्रथम मंत्र ऋग्वेद के प्रथम अष्टक के प्रथम अध्याय के प्रथम अनुवाक् का प्रथम मत्र है—

"ओइम् अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देव
ऋत्विजम् होतारं रत्नधातमम ॥"

पुरोहित शब्द का प्रयोग प्रारम्भ से हो कव्याण चाहने वाला, अग्रणी, प्रकाशक यजनकर्ता, देवदूत' अग्नि के अर्थ में वेद में भिन्न भिन्न स्थलों पर हुआ है । क्यों कि सिर्फ ब्राह्मण ही पुरोहित बन सकता है अत एव पुरोहितो करना ब्राह्मण मात्र का अनिवार्य धार्मिक कर्तव्य और दायित्व बन जाता है पौरोहित्व और ब्राह्मणत्व अन्योन्याश्रित हैं। अतः थोड़ा बहुत पुरोहिती का काम हर ब्राह्मण को अवश्य करना चाहिये ।

पुरोहिती के विरूद्ध में गोस्वामी तुलसीदास की रामचरित मानस में वशिष्ठ जी की उक्ति "पौरोहित्य कर्म अति मन्दा" प्रायः लोग कह टालते हैं । पृष्ठभू का प्रसंग है कि ब्रह्माजी के कई पुत्र जो वशिष्ठ जी के ही भाई थे, सृष्टिरचना में ब्रह्माजी के सहायक न बनकर विरक्त हो गये थे, परम तत्व की उपासना में लग गये थे । वशिष्ठजी भी उन्हीं की तरह ब्रह्म-चिन्तनमें लगना चाहते ते, कोई शूद्र वृत्ती या खान वृत्तिकी नौकरी या वैश्व वृत्तिवाली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृषि, गोरक्षा या वाणिज्य अथवा क्षत्रियवृत्ति से धनोपार्जन करना नहीं चाहते थे। इसलिये ब्रह्म-चिन्तन से पुरोहिती कर्म को मन्दा कहा। फिर भी पुरोहिती किया क्यों कि ब्रह्माजी ने विश्वास दिलाया कि उनके यजमान कुल सूर्य वंश में स्वयं ब्रह्म सगुण रूप में अवतरित होंगे जिससे वशिष्ठ जी को ब्रह्म प्राप्ति का लाभ अवश्य मेव मिलेगा जब कि उनके अन्य भाईयों का प्रयास अनिश्चयात्मक था। क्षत्रिय, वैश्व और शूद्र वृत्तिसे तो ब्राह्मणवृत्ति पुरोहिती अवश्य अधिक श्रेष्ट है, अन्यथा, वृहस्पति, शुक्राचार्य, गर्ग, शाण्डिल्य और वशिष्ठजी आदि पुरोहिती क्यों करते। और तो और राज्य त्यागकर अत्यन्त उग्रतपस्या के बाद ब्रह्मर्षि बननेवाले विश्वामित्रजी भी पुरोहिती कराये और वशिष्ठजी के यजमान सूर्यवंश को यजमान बनाया। पूज्य स्वामी सहजानन्द सरस्वतीजी ने भी ऐसा ही लिखा वेदों में याचक अयाचक या इसी प्रकार का कोई भी भेद ब्राह्मणों में कहीं भी नहीं वर्णित है पहले पहल वाल्मीकीय रामायण के बालकाण्ड में अयोध्या के राजमहल के इर्द गिर्द ऐसे ब्राह्मणों का जिक्र हैं जो निरन्तर वेद का स्वाध्याय करते थे और अध्यात्म चिन्तन करते थे तथा दान प्रतिग्रह से संयम रखते थे। अर्थात् सम्पन्न ब्राह्मण परिवार के थे। उसी ग्रंथ के अयोध्याकाण्डके द्वितीय अध्याय में श्रीरामचन्द्रजी के वनवास के लिये जाते समय दान करने के प्रसंग में एक अयाचक ब्राह्मण त्रिजटा का जिक्र है जो फाल और कुदाल के सहारे जंगल जंगल घूमकर अपना, अपनी स्त्री और बच्चों का अति कष्ट से दरिद्रता से भरण पोषण कर पाता था जो अपनी स्त्री के कहने पर फाल, कुदाल फेंक कर श्रीरामचन्द्र के सामने याचक बना। श्रीरामचन्द्र ने उसे इतनी प्रचुर धन-सम्पत्ति दी कि वह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुत संपन्न हो गया और फिर उसे याचक बनने की जरूरत ही नहीं रह गई। ऐसे ही ब्राह्मण सम्पन्न बनकर अयोध्या के राजमहल के इर्द गिर्द रहते थे। श्रीरामचन्द्र से भागने वाला दुबारा याचक नहीं रह सकता। कहा भी है—

,,द्विदःशस्त्राभि संधते द्विस्त्यापयति नाश्रितान्।
द्विर्ददाति न चार्थिभ्यो रामो द्विर्नाभिभाषते" ॥

महान् राजनीतिज्ञ और महान् राजनीतिशास्त्र कौटिलीय अर्थशास्त्र के महान प्रणेता महर्षि चाणक्य पूर्ण बालब्रह्मचारी और निःस्पृह ब्राह्मण थे जिन्होंने अपने बुद्धिकौशल से महान् मौर्य साम्राज्य को जन्म दिया और उसके प्रधानमंत्री, महामात्य बने और स्वेच्छासे ही पदत्याग करके संन्यास भी लिया ये भी पूर्ण याचक थे जैसा इनके महान् शिष्य आचार्य कामन्दक ने अपने महान् ग्रंथ नीतिशास्त्र में अपनी गुरुवन्दना के संदर्भ में लिखा है। पर गुरू आचार्य चाणक्य ने स्वयं ऐसा कुछ नहीं लिखा क्यों कि उनकी दृष्टि में यह महत्त्वहीन था। हाँ, अपने अप्रतिग्राही अयाचक होने का गर्व और सम्पन्नता का अभिमान परवर्ती महाकवि बाणभट्टको अवश्य था। क्यों कि उन्होंने स्वयं इसका उल्लेख अपने महान् ग्रंथ हर्षचरित में किया है। इस गाँव के बहुसंख्यक निवासी मनेरिया भूमिहार ब्राह्मण जिनके पूर्वजों को कान्यकुब्ज वंशी गहरवार वंशी क्षत्रिय राजाओं ने चार चार ताम्रपत्रों के द्वारा विद्वत्ता के पुरस्कार स्वरुप दानमें हजारों गाँव पटना जिले के मनेर के आस पास दिया जिसके लिये ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण आज से नव सौ तेरह वर्ष पहले संवत् ११३८ विक्रम में कान्यकुब्ज प्रदेश छोड़कर मनेरके राजा बने और सम्पन्नता के कारण अयाचक और बाद में भूमिहार ब्राह्मण बन गए। अधिकांश भूमिहार ब्राह्मण मूलतया कान्यकुब्ज ब्राह्मण ही हैं जो समय-समय पर कान्यकुब्ज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रदेश छोड़ छोड़ कर अन्यत्र आये जैसे मनेरिया ब्राह्मणों के पूर्वज आये थे। उक्त ताम्रपत्र की प्रतिलिपी इस गांव की वंशावली अपनी महान् रचना "सैनिक ब्राह्मण" में स्व० पं० सूर्यनारायण शर्मा जी ने ज्योंकी त्यों अंकित कर दी है। पूज्य स्वामी सहजानंद सरस्वतीजी ने भी अपनी एक छोठी पुस्तक "झूठा भय मिथ्या अभिमान" में लिखा है कि ,काशी बेतिया,नरहन, सुरसंड शिवहर आदि के राजे महराजे और एकसरिया, जैंथरिया, दंसवार, गौतम दोनवार वगैरह वंश के जितने बाबुआन हैं उनकी वर्तमान सम्पत्ति और महाराजा दरभंगा का राज्य भी उसी पुरोहिती, दक्षिणावृत्तिया प्रतिग्रहवृत्ति के फल है। शायद इनमें एकाध ही न हों तो न हों। "ब्रह्मर्षिवंश विस्तर" में पूज्य स्वामीजी ने लिखा हैं।

विन्ध्योत्तरवासी पंचगौड में सारस्वत, कान्यकुब्ज, उत्कल, गौड़ और मैथील गिनाये गये हैं। हरिप्रसाद, भागीरथ, के यहाँ छपे ',बृहत्कान्यकुब्ज कुल दर्पण" के ११७ वें पृष्ठ में लिखा है कि विक्रमीय संवत १५८४ (सन् १५२६ ई०) में मदारपुर के अधिपति भूमिहार ब्राह्मणों और यवनों में बहुत युद्ध हुआ और सब ब्राह्मण परास्त हुए यह बात ३६० वंशावलियों को देखकर लिखी गई है। पं० दुर्गादत्त त्रिपाठी एवं पं० मुकुन्दराम द्वारा संवत १९६४ में छपवाई हुई और "गंगा विष्णु श्रीकृष्णदास" के यहाँ से प्रकाशित "कान्यकुब्ज वंशावली" के पृ० १०५ में लिखा है—

"अथ काश्यपमाख्यास्से गोत्रं तु मुनिसम्मतम्।
पूर्ववंशावलि दृष्ट्वा ज्ञातं षष्ठि शतत्रयम्॥
मदारादिपुराख्यस्य भूमिहारा द्विजास्तु ये।
तेभ्यश्च यवनेन्द्रैश्च महद्युद्धमभूत्पुरा॥
तेभ्यश्च ब्राह्माणाः सर्वे परास्ताअभवंस्ततः॥ इत्यादि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अत एव कान्यकुब्ज ब्राह्मणों का इतिहास ही। अधिकांश भूमिहार ब्राह्मणों का इतिहास है। इस प्रकार "कान्यकुब्ज वंशावली" और स्वामी सहजानन्द सरस्वतीजी द्वारा लिखित ब्रह्मर्षि-वंश विस्तर ठीक से पढ़े बिना भूमिहार ब्राह्मणों के सम्बन्ध में दूसरों द्वारा न कुछ भी विश्वसनीय लिखा जा सकता है न कहा जा सकता है। अन्यथा कहना पूर्णतया नादानी होगी।

सुप्रीम कोर्ट द्वारा अनुमोदित होकर आज आरक्षण का कानून देश का सर्वमान्य विधान है। उसका हम आदर करते हैं और नौकरी के इच्छुक बन्धुओं से साग्रह निवेदन करते हैं कि आरक्षण से मुक्त रिक्तियों को ही प्राप्त करने के लिए सदैव प्रयास करें। विद्या, तप और चरित्रबल के आधार पर ब्राह्मण वर्ग पूर्ववत् अग्रणी बना रह सकता है। हाँ पिछड़े वर्ग के गरीब लोगों के लाभान्वित होने के लिए आवश्यक है कि आरक्षण से बाहर रहने के लिये धनराशि की सीमा युक्ति युक्त निर्धारित हो। जैसे आयकर की सीमा में आने वाला आरक्षण की सुविधा से मुक्त माना जाकर आरक्षण के लिए अयोग्य हो जाय। आदर्श रखाजाय कि सभी गरीबों को निःशुल्क उत्कृष्ट शिक्षा सुलभ की जाय और आवश्यकता अनुसार सहायता राशि से भी मदद किया जाय। शिक्षाकी भी विभिन्न स्तर, कोटियां समाप्त कर सिर्फ श्रेष्टतम कोटि की ही शिक्षा सब को सुलभ हो। संस्कृति और सभ्यता के हित में संस्कारों का भी समुचित परिष्कार और विकास हो। समस्त श्रेष्ठ भारतीय वाङमय संस्कृत में निहित है। संस्कृत विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा के रुप में विश्वभर में मान्य हो चुकी है। इस देश का' हिन्दू धर्म का और नैतिकता तथा ब्राह्मणत्व का यह जीवन और प्राण ही है। इसे विश्वभाषा प्रतिष्ठत कराने के लिये इसके अध्ययन,अध्यापन, और विकास के लिये समुचित व्यवस्था और प्रचार हो। पौरोहित्य के अभाव में न धर्म हैं न ब्राह्मणत्व ही जीवित रह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सकता है । अतः इसे ब्राह्मणों में अधिक जन प्रिय बनाया जाय । अन्य नये मजहबवाले अपने अपने मजहब की संख्यावृद्धि के लिये हर प्रकार का प्रयास करते हैं । प्राचीनतम विश्वधर्म वैदिक सनातन धर्म का प्रचार प्रसार विकास होने के बजाय उदास ही हो रहा है जिसके लिये हमारा ब्राह्मण समुदाय सबसे अधिक दोषी है । हम अपने पूर्वजों का अनुकरण करते हुए वेद का आदेश पालन करते हुए उदारता पूर्वक स्वधर्म के अनुयायियों की संख्यावृद्धि करें । इसके लिये आवश्यक है कि दूसरे मजहबों के ग्रंथों को भी अवश्य ठोकसे पढ़ें समझे । हिन्दुओं के बाद अधिक संख्या मुसलमान और ईसाई बन्धुओं की है । अतः उनके मजहबी ग्रंथ कुरान आदि अवश्यक पढ़े और पढ़ावें । प्रत्येक ब्राह्मण, यहां भूमिहार ब्राह्मण, विद्या, तप, चरित्र, आहारविहार उत्तर कोटिकी धारण करें । वेद का आदेश है कि आहारशुद्धि से ही सत्त्वशुद्धि संभव है और उससे स्मृति ध्रुव होती है जिससे सभी संकायें स्वतः निर्मल हो जाती हैं । सात्त्विकता से ही आयु, सत्त्व, बेल, आरोग्य, सुख, प्रीति आदि बढ़कर उत्तमता प्रदान करते हैं । ऐसा गीता में कहा है । आयुः सत्त्व बलारोग्य सुथप्रीति विवर्द्धनाः ।

रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्याः आहारा, सात्त्विक प्रियाः राजसी भोजन दुःख शोक, रोग देने वाला होता है ।

कट्वम्ल लवणात्युष्ण तीक्ष्ण-रुक्ष-विदाहिनः ।
आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकाभयप्रदाः ।।

तामसी भोजन तो बुद्धि विनाशक आदि भी होता है ।

यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत् ।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामेसप्रियम् ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतएव सात्विक आहार–विहार उत्तम है तथा शरीर मन शुद्धि के अतिरिक्त लोक और परलोक में भी इससे सम्मान मिलता है। सम्पूर्ण हिन्दू समाज को सुव्यवस्थित और सुसंगठित रखकर धर्म की उदात्तता बनाये रखने का हमारे ब्राह्मण समाज का धार्मिक कर्त्तव्य है। अतः हम अपने पूर्वजों की तरह उदार बनकर वेद के आदेश का पालन करके स्वधर्म में दीक्षित करने के लिए द्वार उन्मुक्त कर दें। यह हमारा दायित्व है जिसको हम अपने पूर्वजों की तरह ब्रह्मणोंचित आचरण का पालन करते हुए पूर्व गौरव को पुनः प्राप्त करें। ब्राह्मण समाज विशेषकर भूमिहार ब्राह्मण समाज से साग्रह प्रार्थना है कि ब्राह्मणोंचित आचार–व्यवहार कर्त्तव्य का यथा साध्य पालन अवश्य करें। उपनयन गायत्री, सध्यावंदन, पौरोहित्य सभी को उचित सम्मान देते हुए धारण करें। सामाजिक दोषों के उन्मूलन साच्चिकता और धर्म आस्तिकता का आधार होने पर स्वयं निर्मूलन हो जाएगा।

सभी ब्राह्मण वर्गों को एक साथ लेकर आप हिन्दू धर्म और समाज के सभी दोष सामाजिक और जातीय विद्वेष समाप्त करने के लिये उचित प्रयास करें और विधर्मियों को स्वधर्म सहर्ष स्वागत करें, उन्हें पूर्णतया हिन्दू सनातनी समानता के आधार बना लें।

अपने सभी पूज्य पूर्वजों को प्रणाम करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करते है कि आप सबों का समुचित स्वागत सत्कार करने की क्षमता दें। आप सबों का पुनः स्वागत करते हुए प्रार्थना करते हैं कि भूल चूकों के लिए क्षमा करेंगे क्योंकि वे आकस्मिक और अनिच्छित होंगी।

विश्व ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करने वाले सविता के श्रेष्ठ वरणीय तेज को प्रणाम कर धारण करते हुए प्राथना करते हैं कि हमारी बुद्धियो को सन्मार्ग में प्रेरित करें।

हम है, आपके सेवक

सिमरी ग्राम के निवासी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महामंत्री का भाषण (पं० चौधरी राजनारायण शर्मा, विशारद)

माननीय अध्यक्ष महोदय तथा उपस्थित ब्राह्मण बन्धुओं !

आज पुराने भोजपुर जिले के सिमरी (बक्सर) की पुण्य भूमि पर (जहाँ पूज्य स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने निवासकर " कर्मकलाप " की रचना की थी तथा जिसने पं० सूर्यनारायण शर्मा जैसे सामाजिक गौरव के रक्षक को जन्म दिया था) आप भाइयों का दर्शन कर अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं। इस ३४वीं भूमिहार ब्राह्मण महासभा के संयोजक पं० चन्द्रभाल राय एडवोकेट भी सामाजिक गौरव के रक्षक और इसी गाँव के निवासी है।

इसी प्राचीन जिले के नवरंगा ने श्री स्वामी हंसानन्द सरस्वती को जन्म दिया था तथा मँगराँव में जन्म ग्रहण कर श्री स्वामी विमलानन्द सरस्वती (भोजपुर के महाकवि, अ० भा० भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष, राज-गुरुमठ शिवाला घाट वाराणसी तथा स्वामी सहजानन्द सरस्वती स्मारक न्यास बक्सर के अध्यक्ष) आज भी हमारे समाज की गौरव रक्षा में कार्यरत हैं। अतएवं इस धाम और जिले को नमन करता हूं तथा अखिल भारतीय भूमिहार ब्राह्मण महासभा का संगठनात्मक इतिहास संक्षेप में प्रस्तुत करता हूं

सन् १८८२ ई० में भूमिहार ब्राह्मणों की पहली महासभा पटना में रुपौली, मुजफ्फरपुर के श्री पं० रघुनाथ प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में हुई थी। विधिवत् अखिल भारतीय भूमिहार ब्राह्मण महासभा की स्थापना सन् १८८५ ई० में काशी नरेश महाराजाधिराज द्विजराज श्री ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह के प्रयास से हुई।

महासभा का उद्देश्य-विद्या प्रचार संस्कृत भाषा का प्रचार, विद्यालयों और छात्रावासों का निर्माण, अनाथ बालक तथा विधवाओं की सहायता,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्याह, श्राद्ध आदि में फिजूल खर्ची रोकने, तिलक दहेज का निषेध आदि था।

सन् १८९८ ई० तक महासभा के चार अधिवेशन ही हो पाये थे। ५वां अधिवेशन सन् १८९९ ई० के मार्च में मुजफ्फरपुर में मॉझा राज्य के राजा श्याम शिवेन्द्र नारायण शाही की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। महासभा की प्रेरणा से सन् १८९९ ई० में ही भूमिहार ब्राह्मण कालेज और भूमिहार ब्राह्मण कालेजियट की स्थापना मुजफ्फरपुर में बाबू लंगट सिंह ने की और आगे चलकर उसका भवन बनवाया और सन् १९०९ ई० तक लगातार प्रतिवर्ष पचास हजार रुपया देकर उसे चलाते रहे उक्त भूमिहार ब्राह्मण कालेज में डा० राजेन्द्र प्रसाद, आचार्य कृपलानी, मलकानी, प्रो० रामदास राय, प्रो० अवध बिहारी शाही (अरबी फारसी के अन्तराष्ट्रीय विद्वान) आदि जैसे ख्याति प्राप्त अध्यापक रह चुके थे। बाद में भूमिहार ब्राह्मण छात्रावास का निर्माण भी हुआ। महासभा का छठॉ अधिवेशन सन् १९०० ई० में प्रयाग में काशी नरेश महाराजाधिराज द्विजराज सर प्रभुनारायण सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ और सन् १९०१ ई० से महासभा की पत्रिका "भूमिहार ब्राह्मण" बराँव राज प्रेस प्रयाग से निकलने लगी।

१९०९ ई० और १९१२ ई० के बीच भी महासभा के अधिवेशन हुए और १९१२ ई० से भूमिहार ब्राह्मण पत्रिका का प्रकाशन मुजफ्फरपुर से प्रो० पं० रामदास राय, पं० कामेश्वर नारायण सिंह आदि के सम्पादकत्व में होने लगा। सन् १९०१ ई० से सन् १९०६ ई० के बीच विभिन्न स्थानों में छः अधिवेशन हुए महासभा का तेरहवां अधिवेशन छपरा में सन् १९०८ ई० में जगतगंज (काशी) के श्री पं० इन्द्रदेव नारायण सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"भूमिहार ब्राह्मण पत्रिका" भी छपरा से पं० अम्बिका प्रसाद शर्मा के सम्पादकत्व में निकलने लगी। सन् १९१२ के ७ और ८ अप्रिल को देवरिया में महासभा को समिति की बैठक उपाध्यक्ष बाबू लंगट सिंह को अध्यक्षता में हुई। उसी वर्ष बलिगाँव (वैशाली) निवासी भू० पू० अवर पुलिस निरीक्षक श्री प्रदीप नारायण सिंह ने "ब्राह्मण जगत" नाम की पुस्तक प्रकाशित किया। समाज के गौरव स्वमान धन्य बाबू लंगट सिंह का देहांत १५ एप्रिल सन् १९१२ ई० हो जाने से सारा समाज शोकाकुल हो गया। सन् १९१३ ई० के दिसम्बर में बलिया में महासभा का अधिवेशन हथुआ नरेश महाराजा गुरु महादेवाश्रम प्रसाद शाही की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस महासभा में प्रथम बार पूज्य स्वमी सहजनन्द सरस्वती का पदार्पण हुआ और ब्राह्मण धर्म पर आपका भाषण हुआ सन् १९१४ ई० में भी महासभा का अधिवेशन हुआ। सन् १९१६ ई० में २१ एप्रिल २३ एप्रिल तक महासभा का २० वाँ अधिवेशन दरभंगा में अमावाँ नरेश राजा हरिहर प्रसाद नारायण सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ – स्वागतध्यक्ष थे नरहन राज्यधिपति कामेश्वर नारायण सिंह। इस महासभा में दरभंगा महाराज रामेश्वर सिंह (मैथिल ब्राह्मण) भी उपस्थित थे। महासभा की पत्रिका के माच १९१६ तक चलने के बाद बन्द हो जाने पर पूज्य स्वमी जी के प्रयत्न से एप्रिल सन् १९१६ ई० पं० श्याम नारायण शर्मा (सराय गोवर्धन, काशी) ने "भूमिहार ब्राह्मण पत्र" निकाला और भूमिहार ब्राह्मण प्रेस की स्थापना की। पत्र तो आगे चलकर बन्द हो गया-पर प्रेस अभी भी उनके पुत्र पं० उमाशंकर शर्मा द्वारा संचालित है। महासभा का २१ वाँ अधिवेशन सन् १९१६ ई० के दिसम्बर में ही राजा सिद्धेश्वरी प्रसाद सिंह (बलेमगढ़) की अध्यक्षता में भागलपुर में सम्पन्न

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हुआ। २२वीं महासभा का अधिवेशन सन् १९१८ ई० में हुआ और उसके महामंत्री बने काशी राज्य के मुख्य सचिव श्री बिन्देश्वरी प्रसाद सिंह। सन् १९२० ई० में कलकत्ता में बंग प्रान्तीय भूमिहार ब्राह्मण सभा के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता महाराजा गुरु महादेवाश्रम प्रसाद शाही ने की। २३वीं महासभा का अधिवेशन सन् १९२२ ई० के दिसम्बर में गया में सर गणेशदत्त सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। २४वाँ महासभा का अधिवेशन सन् १९२४ ई० के मार्च में मुजफ्फरपुर में तमकुही नरेश राजा इन्द्रजीत प्रताप बहादुर शाही की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस महासभा में श्री राम दयाल सिंह ने विद्याफंड के लिये अपीलकी सफलता भी मिली। महासभा का २५ वाँ अधिवेशन खलीलाबाद (बस्ती) में मकसूदपुर के राजा चन्द्रेश्वर प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। पूज्य स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने कर्म धर्म में स्वावलम्बन और याचक-अयाचक भेद मिटाने की दृष्टि से पुरोहिती प्रस्ताव रखा-लेकिन पास न हो सका। इससे पहले सन् १९२५ ई० में ही उत्तर प्रदेश भूमिहार ब्राह्मण सभा के अधिवेशन में यह प्रस्ताव पास हो चुका था। इसी वर्ष समस्तीपुर में भी प्रान्तीय भूमिहार ब्राह्मण सभा का अधिवेशन हुआ। अयाचक ब्राह्मणों को एक सूत्र में आबद्ध करने की दृष्टि से स्वामी जी के प्रयत्न से महासभा का २६ वाँ अधिवेशन पटना में मेरठ के त्यागी ब्राह्मण चौधरी रघुबीर नारायण सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस महासभा में स्वामी जी का पुरोहिती वाला प्रस्ताव पास हो गया। संस्कृत शिक्षण संस्थाओं को बाढ़ आ गयी और आगे चलकर हजारों संस्कृत विद्वानों का उदय हुआ, जिसमें स्वामी विष्वकसेनाचार्य, पं० रामलक्ष्मणाचार्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पं० रामनारायण शर्मा, पं० राम पदारथ शर्मा, डा० राम करण शर्मा, पं० महेश शर्मा, पं० गणेश शर्मा, पं० शिवकुमार शर्मा, पं० मधुसूदन मिश्र, डा० प्रभुनारायण शर्मा आदि जैसे प्रकाण्ड विद्वान आदि रहे हैं। इस महासभा के महामंत्री बने-पं० रामबहादुर शर्मा, एडवोकेट (पटना)। इसी वर्ष पं० राम बहादुर शर्मा ने

"ब्राह्मण परिचय" पुस्तक प्रकाशित किया। महासभा के अध्यक्ष त्यागी ब्राह्मण चौधरी रघुबीर नारायण सिंह ने महासभा के कुछ दिन बाद ही अपनी पौत्री की शादी घोसवरी (पटना) के श्री पं० नरसिंह नारायण सिंह के भतीजे से कर त्यागी और भूमिहार ब्राह्मणों की वैवाहिक एकता का प्रारम्भ किया। सन् १९२८ ई० में सर गणेशदत्त सिंह ने मेरठ में त्यागी ब्राह्मण सभा की अध्यक्षता की। इसी बीच १९२६ ई० और १९२७ ई० में कान्यकुब्ज ब्राह्मण महती सभा ने अपने प्रयाग और लखनऊ के अधिवेनों में जिसके सभापति थे राजा कृष्णदत्त दूबे (जौनपुर) और पं० उमाशंकर वाजपेयी, एडवोकेट) प्रस्ताव पारित कर सरयूत्यगी सनाढ्य, भूमिहार, जुझौतिया, पर्वतीय और बंगाली ब्राह्मणों के अपना अभिन्न अंग घोषित करते हुए वृहत् कान्यकुब्ज संगठन के लिए एक मंच पर आने का आह्वान किया। दोनों अधिवेशनों के अध्यक्षों, स्वागताध्यक्ष न्यायाधीश पं० गोकर्णनाथ मिश्र, पं० रविशंकर शुक्ल और प० वेंकठेश नारायण तिवारी ने भी अपने भाषणों में भूमिहार ब्राह्मणों को अपना अभिन्न अंग बताया तथा "कान्यकुब्ज हितकारी" के सम्पादक पं० सदय नारायण मिश्र ने भी अपनी टिप्पणी लिखकर इसका समर्थन किया। सन् १९२८ ई० में अखिल भारतीय सारस्वत ब्राह्मण सभा ने अपना एकत्व

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रदर्शन करते हुए काशी नरेश को अपना संरक्षक बनाया तथा दो भूमिहार ब्राह्मणों (पं० राम बहादुर शर्मा और पं० कपिलेश्वर मिश्र) को अपनी स्थायी समिति का सदस्य बनाया। ये दोनों प्रतिनिधि के रुप में अधिवेशन में शामिल हुए। सन् १६२६ ई० में मुँगेर में महासभा का २६ वाँ अधिवेशन सर गणेशदत्त सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसके स्वागताध्यक्ष थे, बिहार केसरी डा० श्री कृष्ण सिंह। इस महासभा ने अपने छठे प्रस्ताव में कान्यकुब्ज ब्राह्मण महतो सभा के प्रयाग और लखनऊ के एकत्व प्रस्ताव पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए उन सभाओं के संचालकों को धन्यवाद देते हुए भविष्य में शीघ्र एकता बद्ध हो जाने की आशा करते हुए भूमिहार ब्राह्मणों से उसी प्रकार एकता में साथ देने तथा अभी से एक दूसरे की सभा में आने जाने का प्रस्ताव पारित किया। इसी महासभा में सर गणेशदत्त सिंह ने समाज द्वारा एक लाख रुपया शिक्षा मद में एकत्र करने पर उन्होंने भी उतनी ही राशि देने की घोषणा की। समाज ने तो एकत्र नहीं किया–फिर भी सर गणेशदत्त ने स्वयं तेंतालीस हजार रुपये भूमिहार ब्राह्मण छात्रों के लिए पटना विश्वविद्यालय में जमा किया। इस महासभा के साथ अखिल भारतीय भूमिहार ब्राह्मण छात्र सम्मेलन भी हुआ महासभा के पण्डाल में ही ३० मार्च को अखिल भारतीय कर्मकाण्डी सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन भी हुआ। इस महासभा अधिवेशन में स्वामी जी और सर गणेश में मतभेद हो जाने से आगे महासभा की प्रगति अवरुद्ध हो गयी। बंग प्रान्तीय भूमिहार ब्राह्मण सभा के सहयोग से पं० सूर्यनारायण शर्मा ने कलकत्ता से सन् १६३५ ई० से सन् १६३८ ई० तक 'भूमिहार ब्राह्मण' पत्रिका निकाली। बंग प्रान्तीय भूमिहार ब्राह्मण सभा का अधिवेशन पं० लोकनाथ द्विवेदी की अध्यक्षता में सन् १/८/३७ को हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तथा मंत्री बने, पं० मुनीश्वर राय शर्मा (रामपुर, भोजपुर निवासी) । इन्हीं पं० मुनीश्वर राय शर्मा तथा पं० शिवनन्दन राय, एडवोकेट, पटना (सुहवल गाजीपुर निवासी) आदि के प्रयत्न से पटना में सन् १९३८ ई० में महासभा का ३० वाँ अधिवेशन राय बहादुर कुंवर कवीन्द्र नारायण सिंह (काशी) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । सर गणेशदत्त भी उपस्थित । थे स्वागताध्यक्ष थे पं० शिवनन्दन राय और स्वागत मंत्री पं० मुनीश्वर राय शर्मा । फिर छः वर्षो पर महासभा का ३१ वाँ अधिशन सन् १९४४ ई० के दिसम्बर में बक्सर में राय बहादुर महेश्वर प्रसाद नारायण सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । इसके स्वागताध्यक्ष थे कुंवर सूर्यनारायण सिंह और स्वागत मंत्री थे पं० राजेश्वर पाण्डेय । महामंत्री पं० वशिष्ठ नारायण राय, एडवोकेट, (पटना) बनाये गये (बाद में ये सन् १९५० ई० में हाइकोर्ट के न्यायाधीश और पटना विश्वविद्यालय के कुलपति भी बने) । सन् १९४५ ई० में महासभा का अधिवेशन बेतिया में चित्पावन ब्राह्मण डा० मुंजे की अध्यक्षता में संपन्न हुआ । इसके स्वागताध्यक्ष थे पं० हरगुण प्रसाद शाही और स्वागत मंत्री पं० गिरिजा शंकर शर्मा तहसीलदार । महासभा का ३३वां अधिवेशन टिकारी में सन् १९४७ ई० में अबतक महासभा के महामंत्री रहे पं० वशिष्ठ नारायण राय एडवोकेट की अध्यक्षता में संपन्न हुआ । स्वागताध्यक्ष थे श्री स्वामी वासुवाचार्य जी (जिन्होंने समाज के छात्रों के लिए अनेक संस्कृत विद्यालय खोलकर भोजनादि का खर्च देकर पढ़ने की ओर अग्रसर किया था) । बेतिया और टिकारी की महासभा अधिवेशनों को सफल बनाने में पं० शुकदेव शर्मा कर्मकांडी और चौधरी राजनारायण शर्मा ने भी सहयोग किया था । बेतिया महासभा के अवसर पर प्रसिद्ध विद्वान प्रो० पं० जगन्नाथ राय शर्मा की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्यक्षता में तथा टेकारी में प्रो० पं० परमेश्वर प्रसाद शर्मा की अध्यक्षता में अखिल भारतीय भूमिहार ब्राह्मण विद्वत् सम्मेलन भी हुआ था। इस महासभा के बाद कोई अधिवेशन बीच में नहीं हुआ। महासभा के उद्देश्य के अनुसार पूर्व तथा बाद में कुछ कार्य होते रहे।

देश की स्वतंत्रता के बाद लोगों का झुकाव राजनीति की ओर हो जाने से सामाजिक समस्याओं की ओर ध्यान नहीं दिया गया। महासभा का ३४वां अधिवेशन आज ४७ वर्षों के बाद सिमरी (बक्सर) में हो रही है और आशा है कि यह महासभा कार्य करती रहेगी।

सन् १९६५-६६ ई० में अयोध्या में एक केस के समय जल्दी में अखिल भारतीय ब्रह्मर्षि परिषद् नाम से एक संस्था काशी में स्थापित हो गयी। इस नाम से भ्रम फैलने का एहसास होने पर उसका नाम ब्राह्मण परिषद् कर दिया गया। ब्रह्मर्षि व्यक्ति हो सकता है समूची जाति ब्रह्मर्षि नहीं हो सकती। जाति ब्राह्मण की होती है-उसी में मैथिल, भूमिहार कान्यकुब्ज आदि विशेषण लगे हैं। उसके बाद ब्रह्मर्षि सेवा समिति, ब्रह्मर्षि समाज ब्रह्मर्षि परिषद् आदि भ्रामक नामों से कुछ लोगों ने संस्थाएँ स्थापित की यद्यपि दरभंगा, मुजफ्फरपुर, छपरा आदि में ऐसी संस्थाएँ बन्द हो गयीं-पर कुछ तथाकथित विद्वानों और राजनेताओं तथा व्यवसायियों के सहयोग से यत्र तत्र इस गलत और भ्रामक नामों से कुछ संस्था कायम है और उत्तर प्रदेश में तो गलत और अत्यन्त भ्रामक नाम "भूनेश्वर समाज" संस्थापित-संचालित है। गलत नाम की संस्थाओं द्वारा भ्रामक नामों से समाज की छवि को धूमिल किया जा रहा है। १९८१-८२ में मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी में तथा बाबा भूतनाथ की अध्यक्षता में गलत और भ्रामक नामों के सुझाव को नकार कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काशी में प्रादेशिक भूमिहार ब्राह्मण सभा नाम से सम्मेलन हुआ था जिसमें श्री सुधाकर पाण्डेय (सरयूपारीण ब्राह्मण) एम. पी. एक राजपूत विधायक और एक हरिजन विधायक भी उपस्थित थे ।

समाज से आग्रह है कि छवि धूमिल करने और भ्रम फैलाने वाले नामों से संगठित संस्थाओं का नाम बदल दें और स्पष्ट और सही नाम "भूमिहार ब्राह्मण" नाम से ही संस्था का नाम रखें तथा उसी के सदस्य आदि बनकर सामाजिक गौरव की रक्षा करते हुए समाज को भ्रमित होने से बचावें ।

समय आ गया है सभी ब्राह्मणों को एक सूत्र में आबद्ध करने और एक दूसरे की सभाओं में सहयोग और ऐक्य भाव बढ़ाने का । सन् १९२६ और १९२७ ई० के कान्यकुब्ज ब्राह्मण महती सभा के प्रस्तावानुसार अब भी अखिल भारतीय कान्यकुब्ज बोर्ड, सर्वदेशीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण सभा और अखिल भारतीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण सहासभा भूमिहार ब्राह्मणों को निमंत्रित करती हैं । इलाहाबाद में आचार्य झड़प जी, पं० चन्द्रभाल राय और चौधरी राजनारायण शर्मा १९९२ ई० में सम्मिलित हुए थे । कानपुर में सिर्फ आचार्य झड़प जी ही जा सके । अभी २८-२९ मई १९९४ को कानपुर की सभा में पं० चन्द्रभाल राय और चौधरी राजनारायण शर्मा अस्वस्थ होने से नहीं जा सके । अधिक से अधिक लोगों को शामिल होना चाहिये और अपनी भूमिहार ब्राह्मण महासभा में सन् १९२९ ई० के प्रस्तावानुसार उन कान्यकुब्ज ब्राह्मण भाइयों को भी आमंत्रित कर एकत्व भाव को बढ़ाना चाहिये ।

इसके अतिरिक्त अपना अपना संगठन अलग चलाते हुए भी सभी ब्राह्मणों को एक सूत्र में आबद्ध होने के लिए ब्राह्मण अन्तर्राष्ट्रीय, विश्व ब्राह्मण संगठन अखिल भारतीय ब्राह्मण सभा, पूर्वांचल ब्राह्मण समाज आदि के सदस्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बनकर उनमें शामिल होकर ब्राह्मणत्व की गौरव रक्षा और एक होकर धर्म और संस्कृति की रक्षा में सहयोग करें। ब्राह्मण को किसी अन्य वर्ण से द्वेष नहीं, बल्कि ब्राह्मण सदा से अन्य वर्णों का भी कल्याण ही चाहते रहे हैं। अतएव सबों के साथ सन्तावना रखते हुए संगठित होना समय की पुकार है।

आपकी महासभा का ३४वाँ अधिवेशन महासभा के जन्म के ११२ वर्षों बाद हो रहा है। बच्चों की शिक्षा, युवकों का नियोजन, सामाजिक कुरीतियों आदि को दूर करने के प्रति सतत प्रयत्नशील रहें तथा आडम्बर और फिजूल-खर्ची को हटाने की ओर ध्यान दें। सामाजिक गौरव–गरिमा कायम रहे। इस अधिवेशन के आयोजन के लिए पं० चन्द्रभाल राय सहित ग्रामवासियो को धन्यवाद।

चौधरी राजनारायण शर्मा
११/६/१९९४

अधिवेशन में सर्व सम्मति से पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव – १ ब्राह्मणत्व का गौरव–प्राप्ति–ब्राह्मण का गौरव :–

तप, विद्या, सच्चरित्रता और धर्म तथा समाज के प्रति मंगल, कल्याण की भावना ब्राह्मणत्व के पूव गौरव के कारण थे। हमें आज उन उपादानों को धारण करना चाहिए जिससे ब्राह्मणत्व को पूर्व गौरव मिले। उल्लेख्य है कि गीतोक्त स्वभावज ब्राह्मण कर्म शम, दम, तप, शौच, क्षान्ति, सरलता, ज्ञान विज्ञान और आस्तिकता स्वतः आ जायंगे।

प्रस्ताव – २ ब्राह्मणत्व और पौरोहित्य :–

ब्राह्मणत्व और पौरोहित्य अन्योन्याश्रित हैं। एक नहीं तो दूसरा भी नहीं यदि ब्राह्मण नहीं हैं तो पुरोहिती भो नहीं हो सकती है। यदि निश्चित रुप से पुरोहिती का पक्षधर नहीं है और उसे त्याज्य मानता है तो वह ब्राह्मण नहीं है, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र ही हो सकता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति जो अपने को ब्राह्मण मानता है अपनी शक्ति और योग्यता के अनुसार ही पुरोहिती अवश्य करे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रस्ताव – ३ संस्कार और संस्कृति :–

संस्कार ही व्यक्ति–व्यक्ति में अन्तर लाता है, शूद्र से इतर वर्ण को भिन्न बनता है। संस्कारों की अतुलनीय धारणा पर ही सम्पूर्ण सनातन संस्कृति आधारित है। हमारे महान पूर्वजों ने जिन आदर्शों और आचारों से प्रेरित होकर अनुपम संस्कार व्यवस्था किया उन्हीं आदर्शों सिद्धान्तों से प्रेरणा लेकर हम पुनः संस्कारों को व्यवस्थित करें। सम्पूर्ण सृष्टि के कण-कण में, जड़ चेतन सबमें विश्वात्मा की भावना है। भूतयज्ञ, बलिवैश्वदेव आदि तथा पितृ-तर्पण में हर योनियों को एवं जन्म–जन्मान्तर के बन्धुओं और अबन्धुओं की तृप्ति सिर्फ सनातनी वैदिक हिन्दू ही करता है।

प्रस्ताव – ४ संस्कृत शिक्षा :—

आधुनिक संस्कृत शिक्षण पद्धति से प्राचीन आर्ष ग्रंथों का गहन ज्ञान और गूढ़ परिचय नहीं हो पाता है। इस मिश्रित पद्धति से न आधुनिक ज्ञान हो पाता है और न प्राचीन शास्त्रों से सुपरिचय। संस्कृत विश्वविद्यालयों में भी यही दशा है। इससे संस्कृत वाङ्मय के महान् शास्त्र उपेक्षित होकर लुप्तप्राय होते जा रहे हैं। अतः अविलम्ब इस अप्राकृतिक मिश्रित शिक्षण पद्धति को समाप्त कर प्राचीन शिक्षण पद्धति पुनः लायी जाय। प्रशासन से आग्रह है कि इतिहास, भूगोल, गणित आदि आधुनिक विषयों की तरह व्याकरण, ज्योतिष, साहित्य, न्याय, मीमांसा, वेद, दर्शन आदि विषयों की अलग-अलग मान्यता देकर उच्चतम प्रतियोगी प्रशासनिक अदि सेवाओं के लिए परीक्षाओं में स्वीकृत करे। सभी ब्राह्मण चाहे जैसे भी आजीविका अर्जन करें पर संस्कृत का अध्ययन करें। अध्यापन और विकास को जातीय धर्म मानकर करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहिन्दी भाषा भाषियों के विरोध के कारण स्वदेश की स्वभाषा हिन्दी राजभाषा का सम्पूर्ण अधिकार नहीं पा सकी और न पा सकेगी जिससे विदेशी भाषा अंग्रेजी का वर्चस्व आजादी के बाद भी अंग्रेजों के राज्य के समय से भी अधिक बढ़ गया है। सरकार और जनता से यह अधिवेशन साग्रह निवेदन करता है कि सम्पूर्ण देश के लिए समान रुप से सरल और सर्वमान्य तथा सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा, विश्वभाषा संस्कृत को स्वदेश की एकमात्र राज भाषा बनाकर स्वदेश को भाषा की दासता से मुक्त करें।

प्रस्ताव – ५ शुद्धि द्वारा विधर्मियों का हिन्दू धर्म में प्रवेश :—

वेद के आदेशों का पालन करते हुए आर्य वैदिक धर्म से बाहर रहने वाले विधर्मियों को भी उदारता पूर्वक सनातन धर्म में बिना किसी भेद भाव के पूर्णतया अन्य सनातनी हिन्दू की तरह स्वीकार करें जिस प्रकार हमारे पूर्वजों ने भूतकाल में अनेकों बार किया है।

आज सनातन वैदिक धर्म स्वदेश और समूची हिन्दू जाति की सुरक्षा के लिए यह अनिवार्य शर्त बन गया है। जिन जातियों के लोग विधर्मी बन गये हैं वे पुनः अपने पूर्वजों के धर्म में आ जायं, हिन्दू धर्म उनका सहर्ष स्वागत करता है। जो विधर्मी अपनी जाती नहीं जानते उन्हें भी उनके आचार विचार के अनुकूल विशाल हिन्दू धर्म में हिन्दू समाज के समुचित जाति में सम्मिलित कर लिया जाय। ब्रह्मण समाज–रक्षक के लिये क्षत्रिय, समाज के अभाव को दूर करने के लिए वैश्य और सेवा के लिए शूद्र बना सकता है। ब्रह्मण को तो पूर्णतया धर्म का स्वरुप होकर तपस्वी सदाचारी रहना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रस्ताव – ६ आरक्षण समाधान :–

आज देश के उच्चतम न्यायालय द्वारा अनुमोदित होकर आरक्षण देशका सर्वमान्य विधान बन गया है। हम उसका सहर्ष स्वागत करते हैं आदर करते हैं। परन्तु राजनीनिज्ञों ने संभतः प्रति व्यक्ति आयवाले व्यक्ति को ही धनी या क्रीमी लेयर (Gramy Layer) का मानकर आरक्षण की सीमा से बाहर रखा है। इससे गरीब पिछड़े वर्ग के लोगों को आरक्षण के लाभ से वंचित होना पड़ेगा, क्योकि बड़े बड़े नौकर शाहों और राजनेताओं के बच्चे ही मँहगे और उत्कृष्ट विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करके आरक्षण का लाभ उठा पायेंगे, गरीब पिछड़े वर्ग के बच्चे इन लाभों से पूर्णतया वंचित रह जायंगे। आवश्यकता है कि धनी वर्ग या क्रीमी लेयर (Cramy Layer) माने जाने के लिए आयकर की न्यूनतम सीमा पार करने वाली आय को ही पर्याप्त माना जाय। इससे ऊपर की आय क्रीमी लेयर (Cramy Layer) हो। सर्वोत्तम तो यह हो कि सभी गरीब और पिछड़े वर्ग के बच्चों के लिए निःशुल्क और आवश्यकतानुसार सहायता –राशि के साथ उत्कृष्ट शिक्षा दी जाय और खुली प्रतियोगी परीक्षाओं के द्वारा विना किसी भेदभाव के पूर्ण योग्यता के आधार पर नौकारियाँ दीजायं। इससे समाज में विद्वेष विभेद नहीं रहेगा। सभी शिक्षालयों के स्तर एक और उत्कृष्टतम हों।

प्रस्ताव – ७ ब्राह्मण का दायित्व :–

ब्राह्मण समाज का दायित्व था जिम्मेदारी वेदों की रक्षा देवताओं और पितरों की तृप्ति तथा धर्मका अच्छी प्रकार से रक्षण करना है। वेदों की रक्षा के लिए वेदों का ठोक से पढ़ना–पढ़ाना, वैदिक विषयों पर मनंन चिन्तन शास्त्रार्थ करना, लेखादि लिखना आवश्यक है। देवताओं पितरों की तृप्ति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के लिए धार्मिक अनुष्ठानों का अच्छी तरह से किया जाना आवश्यक है। देव पूजन पितृ तर्पण होता रहे। धर्म के संरक्षण के लिए आवश्यक है कि हम तो स्वयं धार्मिक हो ही, सारे हिन्दू समाज में और सारी मनुष्य जाति में उदार और महान् सनातन धर्म का वास्तविक स्वरुप बतावें, समझावें और सबों को धर्म को मानने के लिए प्रेरित करें। भक्ष्या भक्ष्य मद्यपान आदि बुराइयाँ उत्पन्न न होने, दें आहार शुद्धि रहे जिससे सत्त्व शुद्धि रहे, स्मृति अटल रहे और संशयात्मा न हों।

प्रस्ताव– ८ ब्राह्मण की आचार संहिता :–

सभी ब्राह्मण और सभी भूमिहार ब्राह्मण भी अपनीजाति पूछे जाने पर पहले सिर्फ ब्राह्मण ही सभी से कहें। कौन ब्राह्मण पूछे जाने पर ही भूमिहार आदि ब्राह्मण बतावें। सभी कागजों में जाति के स्थान पर सिर्फ ब्राह्मण शब्द ही लिखें और लिखवावें। सभी भूमिहार ब्राह्मण अपने अपने पुराने आस्पद या पदवियाँ फिर से अपनावें। जैसे मनेरिया लोग पाण्डेय आदि हैं, सकरवार और गौतम मिश्र आस्पद वाले हैं, शाण्डिल्य गोत्रवाले नैनजोरा लोग तिवारी हैं। सभी लोग अपने छोड़े हुए आस्पद या पदवियाँ फिर धारण करके नये आस्पद राय सिंह आदि छोड़ दें। सभी ब्राह्मण और भूमिहार ब्राह्मण गायत्री मंत्र का अवश्य शुद्ध-शुद्ध रोज रोज कम से कम ग्यारह बार और अधिक से अधिक जितना बन पड़े जप किसी भी दशा में बोलकर या मन में जरुर कर लिया करें। सभी यज्ञोपवित (जनेऊ) धारण करें और अपने बच्चों से भी धारण करावें। बच्चों को भी स्वयं गायत्री पढ़ावें, सिखावें, रटावें और उनसे जप करावें। गायत्री जप से बुद्धि तेज होती है और मनोरथ पूर्ण होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवताओं का या किसी भी देवता का पूजन आराधन जरुर करें सूर्यनारायण, शंकरजी, भवानी पार्वती जी, कालीजी, गणेशजी, हनुमानजी, रामजी, कृष्णजी, लक्ष्मीनारायणजी, सरस्वतीजी सभी समान रुप से पूज्य और आदरणीय हैं। किसी की भी यासबकी पूजा की जा सकती है सभी लोग जनेउ समय पर बच्चों को दिलावें। सभी ब्राह्मण और भूमिहार ब्राह्मण यथाशक्ति पुरोहिती जरुर करें और करवावें। गायत्री मंत्र से हवन और पूजा कराई जा सकती है। सभी ब्राह्मण और भूमिहारब्राह्मण अपना भोजन शुद्ध सात्त्विक रखें और हर प्रकार के नशे से जरुर हरदम दूर रहें। सभी भूमिहार ब्राह्मणों से प्रार्थना है कि जातीय संगठन नये नये नामों से न बनाये।

अखिल भारतीय भूमिहार ब्राह्मण महासभा के अब एक सौ बारह वर्ष बीत चूके हैं और सभी अन्य ब्राह्मणों की महासभाओं द्वारा यह नाम मान्यता प्राप्त कर चुका है अतः इसी नाम से संगठन बनायें और कुछ वर्षो पहले बने नये नामों के संगठनों का नाम बदलकर इसी पुराने नाम के संगठन के अन्तर्गत काम करें। कभी कभी अखिल भारतीय भूमिहार ब्राह्मण महासभा का अखिल भारतीय अधिवेशन भी करावें।

प्रस्ताव- ९ सामाजिक दोषों का उन्मूलन :-

व्यक्ति जब अपने-अपने को ठीक कर लेता है तो समाज स्वयं ठीक हो जाता है। अतः हम सब लोग अपने अपने को जरुर सही रास्ते पर रखकर ठीक रखें। जो हम दूसरों से कहें, दूसरों को सिखावें वही स्वयं भी जरुर करें। देखा-देखी भलाई बुराई बढ़ती हैं, पुण्य पाप होता है। अतः सभी लोग अच्छा ही करें, अच्छा ही सुनें, अच्छा ही देखें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक दहेज में लड़की वाले कम से कम देना चाहते हैं, लड़के वाले अधिक से अधिक लेना चाहते हैं। हर लड़के वाले का धर्म है कि जितना अपने यहाँ लड़की की शादी में देता है या देने को तत्पर है उससे अधिक अपने लड़के के विवाह में न चाहे, न मांगे, न ले। हर कन्या के अभिभावक का भी धर्म और कर्त्तव्य है कि कन्या के पिता के धनमें कन्या का पूरा हिस्सा विवाह के समय तिलक-दहेज गहना कपड़ा या नकद के रुप में जैसा दोनों पक्ष स्वीकार करें अवश्य दे दे, क्योंकि विवाह के बाद तो कन्या को पिता के धन से दान के रुप में ही थोड़ा बहुत मिल सकता हैं, पूरा नहीं। यह सभी उदारता पूर्वक करें तो तिलक दहेज समस्या ही नहीं रह जाती हैं। विवाहों में अनावश्यक निरर्थक खर्च बिल्कुल ही न करें। सिर्फ शास्त्र की मर्यादा में रहें, अशास्त्रीय, देखाऊ और बर्बाद हों जाने वाला खर्च न करें। खर्च करते समय अपने ब्राह्मण होने का गौरव हरदम बना रहे, याद रहे और इस कारण हर तरह से पूर्ण सात्त्विकता रखी जाय। धन की शोभा दान हैं अपव्यय नहीं।

अशुभ अवसरों पर भी शास्त्र की पूर्ण मर्यादा में रहा जाय। निरर्थक खर्च से शास्त्र और धर्म का उल्लंघन होता हैं। पुण्य के स्थान पर पाप होता हैं। ब्राह्मण की वृत्ति सात्त्विक, पूर्ण सात्त्विक होती है। अतः पूर्ण सात्त्विक रहें। क्षत्रिय, वैश्य की तरह राजसी और शूद्र की तरह तामसी न हों।

प्रस्ताव – १० स्वामीजी की लिखी पुस्तकों में हेर फेर न हो :–

सीतारामाश्रय विहटा के ट्रस्टियो से निवेदन है कि पूज्य स्वामी सहजानन्द सरस्वतीजी को पुस्तकों, लेखों के प्रकाशन में अपने मन से संशोधन, परिवर्तन परिवर्द्धन, घटाना आदि न करें, पूरा ज्यों का त्यों छापें। अत्यन्त दुःख की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बात है कि ब्राह्मण समाज का हस्तामलक "ब्रह्मर्षि वंश विस्तर" से स्वामीजी के हस्ताक्षर के अन्तर्गत लिखा हुआ "नाम परिवर्तन" का प्रथम पृष्ट ही उन्होंने अपने प्रकाशन से गायब कर दिया है। समाज ट्रस्टियों को विवश करे कि वे ऐसा गर्हित काम न करने पावें। ऐसा होने पर तो मोटी मोटी पुस्तकों के अन्दर के परिवर्तन का पता चलना भी असंभव हो जायगा। पूज्य स्वामीजी की आत्मा से अन्याय न हो और न समाज ही अपूर्व विद्वत्ता की देन से वंचित होने पावें।

प्रस्ताव – ११ ब्राह्मणों की एकता :-

सभी ब्राह्मणों को एक सूत्र में आबद्ध करने की दृष्टि से महासभा भूमिहार ब्राह्मणों से अनुरोध करती है कि अधिक से अधिक संख्या में ब्राह्मण अन्तर राष्ट्रीय, विश्व ब्राह्मण संगठन, पूर्वांचल ब्राह्मण समाज आदि जैसी संस्थाओं के भी सदस्य बनकर और उनके अधिवेशनों में भाग लेकर ब्राह्मणों की एकता की भावना बढ़ाने में सहायक बनें। सभी २२ करोड़ ब्राह्मण एक साथ मिलकर देश की धर्मनीति, अर्थनीति, राजनीति सब प्रभावित कर सकते हैं। "ब्राह्मणों ब्राह्मणं दृष्ट्वा श्वानवत् गुरगुरायते" की लोकोक्ति निरर्थक कर दें।

अखिल भारतीय भूमिहार ब्राह्मण महासभा का ३४वां अधिवेशन दिनांक ११ और १२ जून १९९४ को अखिल भारतीय भूमिहार ब्राह्मण महासभा का ३४वाँ अधिवेशन प्राध्यापक चूडामणि, आचार्य पं० रामख्याली शर्मा की अध्यक्षता में "स्वामी सहजानन्द सरस्वती नगर" सिमरी जिला-बक्सर में सम्पन्न हुआ। दोनों दिन सभा की कार्य-वाही प्रारम्भ होने के पहले पाँच-पाँच पण्डितों ने मंगला चरण और स्वस्त्ययन पाठ किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्यक्षकी आज्ञानुसार सभा का संचालन पं० चन्द्रभाल राय एडवोकेड ने किया। तथा स्वागत भाषण भी पं० चन्द्रभाल राय एडवोकेट ने ही किया। तत्पश्चात् महामंत्री चौधरी राजनारायण शर्मा ने महासभा की स्थापना काल से अबतक का संगठनात्मक इतिहास बताते हुए भ्रामक और सामाजिक छवि धूमिल करने वाले संगठनों को भंग कर उचित और पूर्व से प्रचलित विशेषण सहित "भूमिहार ब्राह्मण" नाम से ही बनाने तथा अन्य ब्राह्मण संगठनों से सहयोग यथा ब्राह्मण अन्तर्राष्ट्रीय, विश्व ब्राह्मण संगठन, अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा आदि के भी सदस्य बनकर और उनमें भी शामिल होकर ब्राह्मणों की एकता को प्रशस्त करने का निवेदन किया। चौधरी राजनारायण शर्मा ने सामाजिक इतिहास भी संक्षेप में प्रस्तुत करते हुए सभी ब्राह्मणों की एकता दिखलाई। इसके अतिरिक्त पं० रामकेदार शर्मा, डा० रमाकान्त पाण्डेय पं० बलिराम राय, पं० जगदीश पाण्डेय एडवोकेट, पं० चन्द्रभाल राय एडवोकेट पं० चन्द्रभूषण पाण्डेय, पं० सीताराम पाण्डेय, पं० भूपेन्द्र पाण्डेय आदि कई अन्य व्यक्तियों के भाषण हूए। कुल ग्यारह प्रस्ताव पारित हुए। अध्यक्ष के भाषण और धन्यवाद ज्ञापन के बाद समाज के गौरव त्रय (स्व० प्रो० पं० परमेश्वर प्रसाद शर्मा, स्व० पं० सूर्यनारायण शर्मा (भू० पू० विधायक एवं प्रखंड प्रमुख तथा साहित्य महोपाध्याय), शब्द सम्राट स्व० आचार्य पं० कुलदीप नारायण "झड़प" अध्यक्ष, पूर्वांचल ब्राह्मण समाज) के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित कर सभा विसर्जित हुई।

महासभा द्वारा प्रदत्त अधिकारानुसार अध्यक्ष द्वारा कार्य समिति गठित की गयी। अध्यक्ष सहित कार्य समिति का संगठन इस प्रकार हुआ:—

(१) अध्यक्ष, आचार्य पं० राम ख्याली शर्मा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२) उपाध्यक्ष, पं० दीनानाथ पाण्डेय (पश्चिम बंगाल), श्री पं० राजेन्द्र प्रसाद सिंह, एडवोकेट (बम्बई, महाराष्ट्र) पं० मधुसूदन चौधरी (जमशेदपुर, बिहार) तथा पं० चन्द्रभाल राय एडवोकेट (वाराणसी)

(३) महामंत्री – पं० चौधरी राजनारायण शर्मा विशारद। संयुक्त मंत्री – पं० कामतानाथ राय, एडवोकेट। संगठन मंत्री–पं० ओम् प्रकाश सिंह

(४) कोषाध्यक्ष–बलिराम राय

(५) कार्य समिति के सदस्य :–

पं० हरि प्रसाद मिश्र (रीवाँ म० प्र०), पं० ए०के० सिंह (अहमदाबाद) पं० राजेश कुमार राय (गोरखपुर उ० प्र०), पं० राम नगीना राय (बलिया-उ०प्र०), पं० जानकी रमण झा 'रमण' शाण्डिल्य (अरुणांचल), पं० जलेश्वर प्रसाद सिंह (मेघालय), पं० रत्नेश्वर शर्मा (प० बं०), पं० वाचस्पति राय (प० बं०) पं० गोवर्द्धन मिश्र (उत्तर प्रदेश), डा० रामानन्द राय (उत्तर-प्रदेश), पं० श्याम विहारी कुमार (भिलाई म०प्र०), पं० रामनरेश पाण्डेय (बिहार), डा० रमाकान्त पाण्डेय (विहार), प्रो० डा० बिजय शंकर राय [दिल्ली]। दो सदस्यों का नाम भरा जायगा।

चौधरी राजनारायण शर्मा

महामंत्री

अखिल भारतीय भूमिहार ब्राह्मण महासभा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अध्यक्षीय भाषण"

"ओं आ ब्रह्मन ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्। आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्यो तिव्याधी महारथो जायताम्। दोग्ध्री धेनुर्वोढा अनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्"॥ यजुर्वेद २२/२२

भाव– हे प्रभो ब्राह्मण ब्रह्मवर्चस्वयुक्त हों, क्षत्रिय शूरवीर पराक्रमी महारथी हों, गौएँ खूब दूध देनेवाली हों, घोड़े खूब तेज चालवाले हों, महिलाएँ सुन्दर सद्गुणों वाली रहकर यज्ञकर्त्ता तेजस्वी विजयी वीरों को पैदा करें। समय समय पर बादल बरसे। औषधियाँ फलवती हों। हम सब लोगों का कल्याण हो।

उपस्थित महानुभाव,

गंगा मैया के पूर्वी और दक्षिणी आंगन में बसे हुए इस ऐतिहासिक गाँव के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और ऐतिहासिक महान अधिवेशन का सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुनकर मुझे आपने जो सम्मान दिया है उसके लिये मै आप सबका अत्यन्त आभारी हूं। फिर आपने दो दिनों तक लगातार तन्मयता और रुचि-पूर्वक अधिवेशन की कार्रवाहियों में सक्रिय भाग लेकर परस्पर बिरोधी विचारों को व्यक्त करते हुए भी अन्त में सर्वसम्मति से इतने महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किये, यह आपके प्रतिश्रद्धा और सम्मान उत्पन्न कर देता है। साभा की कर्यावलियों के बीच रंचमात्र भी अव्यवस्था नहीं हुई और एक व्यक्ति भी भिन्न बात करने वाला नहीं दीखा, यह आश्चर्य जनक सत्य है। सम्भवतः इस गाँव की यह विशेषता ही पुराने महापुषों को भी प्राप्त थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूज्य स्वामी सहजानंद सरस्वती जी ने कर्मकाण्डका विश्वकोष 'कर्मकलाप' और ब्राह्मण समाज का हस्तामलक "ब्रह्मर्षिवंश विस्तर" यहीं बैठकर लिखा और इसे आजीवन अपना विश्राम स्थल बनाकर कृपा भाजन बनाया, यह इसकी परम्परा के अनुरुप ही था। इस गाँव के लोगों ने पूर्णतया अपने ही व्यय से इस अधिवेशन का समस्त भार वहन किया है, यह भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। इन सबके लिये जितना भी आभार व्यक्त किया जाय, धन्यबाद दिया जाय, थोड़ा ही है।

श्रद्धेय महासंत्री जी ने अपनी विद्वत्तापूर्ण रिपोर्ट में महासभा के ११२ वर्ष के जीवन का जो संक्षिप्त किंतु सारगर्भित सिंहावलोकन किया है, उससे सम्पूर्ण भूमिहार ब्राह्मण समाज उपकृत हुआ है। एक जगह एकत्रित इतनी सामग्री इससे पहले कभी भी सामने नहीं आई। हम सब उनके कृतज्ञ हैं।

कुछ आधुनिक लोग भ्रम से "ब्रह्मजानाति ब्राह्मणः" कहकर मान बठते हैं कि उनका जन्म ब्राह्मण माता पिता से होने के बाद भी उनके ब्रह्म को न जानने के कारण वे ब्राह्मण नहीं कहला सकते। इसका निराकरण अपने स्वागत भाषण में पं० चन्द्रभाल राय जी एडवोकेट ने कर ही दिया है पर यह भी निवेदन कर दूँ कि ब्रह्म का अर्थ सिर्फ परमब्रह्म ही नहीं होता, वेद भी होता है। ब्राह्मण को वेदज्ञ तो होना भी चाहिए। पर जैसा उपर्युक्त स्वागत भाषण में मनुस्मृति, रामचरितमाँनस और सबसे ऊपर के वेदमंत्र के उद्धरण से स्पष्ट किया है कि ब्राह्मण अविद्वान भी ब्राह्मण ही है। मनुस्मृति में तो अन्यत्र भी स्पष्ट ही कहा गया है कि ब्राह्मण माता पिता से उत्पन्न बालक ब्राह्मण ही होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतः आधुनिक लोगों को भी विषयकीन जानकारी न होने पर अप्रासंगिक तर्क नहीं करना चाहिए और हर विषय का पूर्वापर विधिपूर्वक जानकर ही उस पर मुँह खोलना चाहिए। ज्ञान के बाद स्वीकार कर लेने की प्रवृत्ति अत्यन्त प्रशंसनीय रही है। आधुनिक लोगों की, विशेषकर संपन्न लोगों में पौरोहित्य कर्म के प्रति उदासीनता बढ़ रही है। स्वागत भाषण में भी इसे उचित स्थान ही दिया गया है और आपने इस विषय पर उत्तम प्रस्ताव भी पास किया है। पर कोरे प्रस्ताव या भाषण से समाधान नहीं होगा। सिद्धान्त स्थापित है। पर कार्यान्वयन हम सबको करना हैं और हर ब्राह्मण को अपनी अपनी योग्यतानुसार पुरोहिती अवश्य करना ही चाहिये। और योग्यता सीखने से आती है। इंजीनियर, डाक्टर, वकील जैसे उच्च पदस्थ व्यक्ति सिर्फ हवन कराकर और सत्यनारायण भगवान् की कथा कहकर नहीं बन सकते क्योंकि भगवान् ने उन्हें बड़ा से यज्ञ कराने की भी क्षमता दी है। विधि सीखें, सुने ती सही। मेरी तरह के वृद्ध लोग भी सिखाने-सीखने समझने समझाने के लिये सदैव तैयार, तत्पर रहते हैं। धर्म ब्राह्मणत्व अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। मनुस्मृति के अनुसार तो दोनों एक ही हैं। आप सभी सुपरिचित हैं कि आहार, निद्रा भयव मैथुन में मनुष्य और पशु में एक समान ही प्रवृत्ती होती हैं पर मनुष्य धर्म हीके सम्बन्ध में पशु से भिन्न हैं और धर्म-रहित मनुष्य पूँछ और सींग रहित पशु ही हैं। आप सब ब्राह्मण होने के कारण धर्म के साक्षात् स्वरुप है : अतः धर्म धारण करें। पुरोहिती भी आपका धर्म ही हैं। दूसरों को धर्म सिखाने वाला होने के कारण स्वयं तो आप सदैव पूर्ण धार्मिक रहें। "धर्म न दूसर सत्य समाना" सत्य ही धर्म हैं और सत्य ही साक्षात् नारायण हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ईश्वर सत्, आनन्द स्वरुप है। वह धर्म नहीं जहाँ सत्य न हो।

सत्यान्नास्ति परं धर्मः सत्यान्नास्ति परं तपः।
सत्यान्नास्ति परं देवः विश्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥

हाँ दक्षिणा लेना रंचमात्र भी गर्हित नहीं है। दक्षिणा तो पारिश्रमिक है जैसे डाक्टर, वकील की फीस, इञ्जीनियर, अध्यापक का वेतन। पुरोहिती कराने की फीस ही दक्षिणा है। दान बदले में कुछ पाने की इच्छा या संभावना के बिना दिया जाता है। हाँ दान स्वीकार करने उपकार के बदले में कभी कभी दक्षिणा भी देनी पड़तो है जैसे कन्यादान स्वीकार करने के बदले में गोदान। यदि पुरोहिती और दक्षिणा पाप या अधर्म होता तो बड़ा राज्य छोड़कर महान् तप के बाद ब्रह्मर्षि" बनने वाले विश्वामित्र सूर्यवंश की पुरोहिती कराकर यज्ञ के द्वारा निःसंदेह स्वर्ग भेजने का उपक्रम क्यों करते। याद रक्खें, दक्षिणा लेना देना भी यज्ञ पूजा आदि का अंश ही है। दक्षिणा के बिना यज्ञ पूर्ण ही नहीं हो सकता। कोई भी ऋषि नहीं था जो यज्ञ नहीं करता और कराता रहा हर ब्राह्मण को जो इस संसार से रहता हो षट्कर्मा होना ही चाहिए। त्रिकर्मा होने की अनिवार्य शर्त है कि घर बार पूर्णतया छोड़ दें। और धन कमाने का कोई धंधा न करें, न वैश्यवृत्ति कृषि गोरक्षा वाणिज्य करे न शूद्र या श्वान वृत्ति रुपा नौकरी ही करे।

आपने पूर्णतया ब्राह्मणोचित संभाषण किये हैं और धर्म, देश और समाज के हित के लिए ब्राह्मण के धर्म की मर्यादा का पालन करते हुए अत्यन्त उत्तम प्रस्ताव पारित किये हैं। संस्कृत के हित में भी आपने उत्तम प्रस्ताव पारित किया। मेरी आप में से प्रत्येक से करबद्ध प्रार्थना है कि आप स्वयं अधिकाधिक संस्कृत पढ़ें, अपने बच्चों सम्बन्धितों को पढायें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उम्र कोई बाधा नहीं है "अजरामरवत्प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत्" सदैव याद रखें। हाँ, इस श्लोक का दूसरा अंश –

"गृहीत इव के शेषु मृत्युना धर्ममाचरेत्"। भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। धर्म को तृतीय चतुर्थ आश्रम के लिये नहीं छोड़कर जन्म के बाद यथाशीघ्र मृत्यु को सदैव याद रखते हुए सदैव धर्माचरण भी करना चाहिये।

इधर लोगों में प्रवृत्ति हो रही है कि अन्य ब्राह्मण समाज से पूर्ववत् विवाह सम्बन्ध में अरुचि दिखावें। यह अच्छा नहीं हैं। हर ब्राह्मण समाजों से विवाह सम्बन्ध सदैव होता रहना चाहिये। यह अधिक विज्ञान सम्मत भी हैं अधिक उत्कृष्ट संततिके प्रजनन का प्रेरक भी हैं। "ब्रह्मर्षि वंश विस्तर" आदि ग्रंथों में विस्तार से सैकड़ों गाँवों और व्यक्तियों के नाम गिनाये और लिखें हैं जिनसे मालूम होता है कि भूमिहार ब्राह्मण जुझौतिया, सरयूपारिण मैथिल आदि ब्राह्मणों से सदैव परम्परया वैवाहिक बन्धन में आबद्ध रहें। अलग होने की प्रवृत्ति खराब हैं। वस्तुतः अब तो और अधि ऐक्य एका होना अत्यन्त आवश्यक है जैसा आपने प्रस्ताव पारित किया हैं।

अन्त में फिर आपको धन्यबाद देता हूं और आपके प्रति अपना आभार प्रकट करता हूं। तथा भगवान श्रीकृष्ण के शब्दों में कहता हूं कि शास्त्र-विधि को छोड़कर काम करने वाला न सिद्धि पाता हैं न इस लोक में सुख और मोक्ष अतएव सभी अच्छे बुरे कार्यों में शास्त्र को ही प्रमाण मानकर कार्य अकार्य निर्धारण करें।

"यः शास्त्रविधि मुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगतिम्॥
तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि॥"

गीता १६/२३–२४

卐 इति शम् 卐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शक्ति प्रिंटिंग प्रेस
सिमरी स्टैण्ड (बक्सर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.